ੴ
ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸਹਾਇ।
श्री सदगुरु प्रताप सिंह स्मृति संगीत सम्मेलन
1975

## *Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library*

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

### To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana

**श्री सद्गुरू प्रताप सिंह जी महाराज**

जिनकी पुण्य स्मृति में यह
संगीत सम्मेलन हो रहा है।

# श्री सद्गुरु प्रताप सिंह जी की पुण्य स्मृति में

श्री प्रीतम सिंह कवि

## श्री सद्गुरु प्रताप सिंह जी

संगीत-प्रेमियों को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि 'श्री सद्गुरु प्रतापसिंह स्मृति संगीत सम्मेलन' को, जिसका तीसरा वार्षिकोत्सव कमानी आडीटोरिम, नई दिल्ली में 15, 16 तथा 17 मार्च को हो रहा है, स्थायी मान्यता प्राप्त हो गई है। और अब यह नियमित रूप से प्रति वर्ष संगीत-पिपासु सहृदयों को बिना प्रवेश-शुल्क भारत भर के चोटी के शास्त्रीय संगीतज्ञों के वादन व गायन नैपुण्य के रसास्वादन का सुअवसर प्रदान करता रहेगा।

श्री सद्गुरु जगजीतसिंह जी, जो इस समय नामधारी जगत के मार्ग-द्रष्टा हैं, की चिराकांक्षा थी कि पिता-सद्गुरु जी की पावन-स्मृति में, उनकी मानसिक तथा आध्यात्मिक रुचि के अनुकूल कोई ऐसा स्मृति-मंच स्थापित किया जाए जिससे संप्रदाय-निरपेक्ष जन भी समान रूप से लाभान्वित हो सकें। प्रस्तुत संगीत-सम्मेलन सदगुरु जी की उसी आकांक्षा की अभीष्ट परिणति है।

श्री सद्गुरु जी की उत्प्रेरणा से गत-तीन वर्षों से दिल्ली निवासी नामधारियों ने अपने दिवंगत सद्गुरु जी की पावन स्मृति में आयोजित संगीत-सम्मेलन के लिए आवश्यक सभी प्रकार के व्यय का उत्तर-दायित्व सहर्ष अपने ऊपर लेकर इस संगीत-प्रवाह को नियमित रूप से प्रवाहमान रखना अपना उद्देश्य निर्धारित कर लिया है। दिल्ली के नामधारी-समुदाय की आर्थिक-स्थिति निश्चय ही इस योग्य है कि वह अपने पूज्य सद्गुरु जी की स्मृति में देश के महान शास्त्रीय संगीत कारों को एक ही विराट-मंच पर एकत्र करने का श्रेय प्राप्त कर सके।

पूर्व-प्रकाशित दो सौवीनियरों में सद्गुरु प्रतापसिंह जी की संगीत-रुचि तथा संगीत के साथ उनके परम्परागत सम्बन्धों का उल्लेख किया गया था। इस बार, विषय-परिवर्तन के हेतु तथा कलाविदों व श्रोताओं-पाठकों को श्री सद्गुरु जी के जीवन के सामाजिक, राजनैतिक आदि अन्य पहलुओं से परिचित कराने के उद्देश्य से संक्षेप में श्री सद्गुरु जी की जीवन-गाथा प्रस्तुत की जा रही है।

## कारा-मुक्ति जन्म

भगवान श्री कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ था; किन्तु हमारे इस भगवान का सारा समाज ही कारावास का जीवन बिता रहा था जब इस (सद्गुरु प्रतापसिंह जी) का संसार में आगमन हुआ। श्री सद्गुरु

सद्गुरु प्रताप सिंह जी अपने प्रिय वाद्य दिलरुबा के साथ संगीत रस-धारा को प्रवाहित करते हुए।

रामसिंह जी तथा पिता सद्गुरु हरीसिंह जी द्वारा विशाल पंजाब क्षेत्र में ब्रिटिश-साम्राज्य के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ने तथा कायम रखने के परिणामस्वरूप समूचे नामधारी-समाज को राजसी प्रतिशोध का शिकार बनाया जा चुका था। श्री सदगुरु रामसिंह जी को 18 जनवरी, 1872 को देश से निर्वासित कर दिया गया तथा पिता सद्गुरु हरीसिंह जी को उनके अनुयायियों सहित गाँव-गाँव तथा घर-घर में नजरबन्द कर दिया गया। विद्रोह के केन्द्र श्री भैणी साहिब (जिला लुधियाना) तथा भैणी साहिब के गुरुद्वारे (सदगुरु जी के निवास स्थान) को शेष संसार से पूरी तरह काटने का प्रयत्न किया गया। यह बात अलग है कि स्वतन्त्रता के सेनानियों ने इस प्रयत्न को अपनी गुप्त-गतिविधियों के बल पर कभी भी पूरी तरह सफल न होने दिया। तथापि पुलिस चौकी के निरन्तर द्वार पर बने रहने के कारण गुरु जी का आवास-स्थान कारागार का ही रूप बना हुआ था। सन् 1872 से 1906 तक नामधारी समुदाय

गत वर्ष कांग्रेस प्रधान शंकर दयाल शर्मा द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन

सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था की

वे अंग्रेजों की लगायी हुई आग की लपटों

गुरमत संगीत की पृष्ठभूमि में सांप्रदायिक एकता की भव्य झलक
(श्री भैणी साहिब लुधियाना)  

के साथ जरायम-पेशा जाति का सा व्यवहार होता रहा।

किन्तु जैसे ही श्री सदगुरु प्रतापसिंह जी का माता जीवन कौर के उदर से श्री भैणी साहिब में प्रकाश हुआ, आप से अप ब्रिटिश सरकार की पाबन्दियां व कठोरताएं शिथिल पड़ गई तथा उस समय के बाल-सद्गुरु सहज-स्वाभाविक वातावरण में फलने-फूलने लगे। इस प्रकार परिवार तथा सम्प्रदाय ने सद्गुरु प्रतापसिंह जी को मुक्ति-दाता सद्गुरु के रूप में जाना।

## शिक्षा

आपने शैशव में पंजाबी तथा हिन्दी अक्षरों का बोध प्राप्त किया तथा कुछ बड़े होने पर संस्कृत तथा अंग्रेजी का भी अभीष्ट ज्ञान प्राप्त कर लिया। यहाँ पर यह स्मरणीय है कि इनके ताऊ श्री सद्गुरू रामसिंह जी के आदेश से समस्त नामधारियों ने सरकार के न्यायालयों, विद्यालयों एवं नौकरियों का पूर्ण बहिष्कार (बाईकाट) किया हुआ था। यद्यपि आपने किसी विद्यालय से शिक्षा ग्रहण नहीं की थी

गई। सैंकड़ों-हजारों मुसलमान जिनका सम्पर्क श्री सद्गुरू प्रताप सिंह जी के साथ रहा है, आज भी उन का नाम लेकर धन्य-धन्य कह उठते हैं।

देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् जब कभी भी हिन्दू-सिक्खों में तनाव की स्थिति पैदा हुई श्री सद्गुरू जी सबसे पहले सामने आए तथा सम्बन्धित मसलों पर सबसे पहले ऊपर के प्रभावशाली व्यक्तियों तथा फिर जनता-जनार्दन से सम्पर्क स्थापित करके मसलों को शान्ति पूर्ण ढंग से सुलझाने पर बल दिया।

## महान निर्माता

देश-विभाजन के पश्चात् जिस प्रकार श्री सद्गुरू जी ने लाखों शरणार्थी नामधारियों को श्री जीवन नगर (जिला हिसार हरियाणा) इलाके में शरण देकर, संकट के दिनों में उन्हें अन्न-वस्त्र तथा धन की सहायता देकर तथा सरकारी उत्तरदायित्व को अपने ऊपर लेकर नए सिरे से उन्हें बसाया तथा लगभग 2000 एकड़ भूमि अपनी निजी भूमि में से देकर भूमिहीनों को जीवकोपार्जन के योग्य बनाया। ऐसा उदाहरण शायद ही कहीं अन्यत्र मिल सके। इस प्रकार का पराक्रम कोई महापुरुष, महाउदारचेता तथा महात्यागी ही कर सकता है।

नामधारी समाज आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ था। अतः आजादी के इस अग्रदूत का दमन करने के लिए अंग्रेज सरकार ने नामधारियों की जमीनें छीन ली तथा छोटे धन्धे वालों को दबा कर रखने के लिए और भी अधिक क्रूरता से काम लिया। इतना होने पर भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात श्री सद्गुरू प्रताप सिंह जी की उदारता, सहृदयता, कृपा तथा पुण्य-प्रताप के फलस्वरूप नामधारी समाज गौरवमय स्थिति प्राप्त करने में सफल हुआ है।

सद्गुरू जी खेती-बाड़ी तथा पशु-धन के साथ भी घनिष्ठता पूर्वक सम्बन्धित रहे। जहाँ आप नयी से नयी किस्म के बीजों से अपने क्षेत्र के कृषकों को अवगत करा कर उन्हें नवीन प्रयोगों के लिए प्रेरित करते रहे वहीं दूसरी ओर गाय-भैंसों की नसल उन्नत करने की दिशा में भी अत्यन्त श्लाघ्य प्रयास किए। यह बात बड़े गर्व के साथ कही जा सकती है कि श्री सद्गुरू जी ने अपनी गऊओं तथा भैंसों की नसल को उन्नत करने में जो उपलब्धि की वैसी उपलब्धि सरकारी संरक्षण में चल रहे पशु-फार्मों के लिए भी सम्भव न हो सकी। उदाहरणार्थ 'श्री सद्गुरू हरी सिंह फार्म' की एक गाय नौलखी ने 36 किलो दूध (प्रतिदिन), दो किलो मक्खन तथा साफ किया शुद्ध घी एक किलो सात सौ ग्राम का रिकार्ड स्थापित किया। श्री सद्गुरू जी की गऊओं ने सुन्दरता तथा उत्पादन में अखिल-भारतीय प्रतियोगिताओं में कई बार प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किए।

सद्गुरू जी की एक इच्छा, जिसे वे मूर्तिमान करने के निकट पहुँच गए थे, यह थी कि एक कृषक को ऐसी गाय मिलनी चाहिए जो उसके लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी हो अर्थात् लम्बे समय तक अधिक से अधिक दूध देने के अतिरिक्त खेती के लिए उपयोगी अच्छे बैल भी उपलब्ध करे।

इसके साथ ही आपने घोड़ों का भी एक तगड़ा फार्म स्थापित किया हुआ था। इस फार्म के रेसों में जीतने वाले पुरस्कृत घोड़ों से प्राप्त धन-राशि गुरु का लंगर जारी रखने में सहायक होती थी। नसल सुधार द्वारा अच्छे बछड़ों की ऊँची से ऊँची कीमत वसूल करके गुरु का लंगर जारी रखा जाता।

## महान उदार व्यक्ति

उदारता में आपके तुल्य कौन हो सकता है ? एक ओर श्री भैणी साहिब (जिला लुधियाना) में दिन और रात अनवरत लंगर चलता रहता है। दूसरी ओर श्री जीवन नगर (जिला हिसार, हरियाणा), जो वर्तमान नामधारी हैड-क्वार्टर है, में भी गत 35 वर्षों से लगातार लंगर जारी है जिसमें से प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में लोग बिना किसी जाति, धर्म व प्रान्तीय भेद-भाव के अन्न-जल छक कर तृप्त होते हैं। तथा अन्य कितने ही नाम-धारी तथा गैर-नामधारी परिवार तथा व्यक्ति हैं जिन्हें गुप्त रूप से धनराशि तथा पशुओं से सहायता देकर श्री सद्गुरू जी ने जीवन-यापन के योग्य बनाया है। इसके साथ ही जिला हिसार में चुकू के सेठों से 500 मुरब्बा जमीन खरीद कर, उसे नाम-धारी कृषकों में उचित मूल्य पर वितरित करके उस जंगली क्षेत्र को लहलहाते खेतों में बदल दिया है। आज भारत भर में सरसा का यह इलाका सर्वाधिक उपज वाला क्षेत्र माना जाता है। नामधारियों का हैड-क्वार्टर होने के कारण यहाँ पर बहुतायत उन लोगों की है जो स्वभाव से सात्विक हैं, न मांस खाते हैं न मदिरा पीते हैं। आठों पहर मानो धार्मिक वातावरण वाला मेला सा लगा रहता है।

श्री सद्गुरू जी ने नामधारियों का उदाहरण प्रस्तुत करके भारत के लोगों के लिए सादगी, स्वच्छता तथा संयम का मार्ग प्रशस्त किया। नामधारी निरामिष भोजन करते, श्वेत वस्त्र पहनते तथा अपने रीति-रिवाजों में बहुत सादा तथा संयमी हैं। विवाह-प्रथा को नामधारी समाज में अत्यन्त सादा तथा समूह-रूप में प्रचलित करके भारत में इस विवाह तथा दहेज की प्रथा से पीड़ित लोगों का मार्ग-दर्शन किया है। नामधारी अपने बेटे-बेटियों का विवाह श्री सद्गुरू जी की हजूरी में, सामूहिक रूप से तथा बिना किसी आर्थिक बन्धन-बोझ के सम्पन्न करते हैं।

## धार्मिक क्षेत्र में

सिक्ख समाज के साथ यद्यपि नाम-धारियों का एक बुनियादी नुकते पर मत-भेद है, क्योंकि सिंह-सभा तथा अकालियों से प्रभावित सिक्ख श्री ग्रंथ साहब को ही गुरू मानते हैं तथा देहधारी गुरू में आस्था नहीं रखते, इस पर भी जब-जब सिक्ख समाज में स्वार्थियों, दलबदलुओं तथा आचरण-हीन लोगों द्वारा गड़बड़ी पैदा हुई, श्री सद्गुरू जी अपनी स्वाभाविक उदारता से प्रेरित होकर सुख, शान्ति तथा एकता का झण्डा लेकर आगे आए। कई बार वे अपनी धर्म-मर्यादा की भी चिन्ता न करके सिक्ख समाज की भलाई के लिए अधिक से अधिक सहिष्णुता का प्रदर्शन करते रहे। पंजाबी भाषा की उन्नति के लिए वे बड़ी से बड़ी कुरबानी के लिए तैयार रहते तथा जब श्री ग्रन्थ साहब की शुद्धि के सवाल को लेकर कुछ परम्परा-विनाशक व्यक्ति सामने आते तो आप समस्त नानक-नाम लेवा धार्मिकों को संगठित करके मन-मानी करने वालों को पछाड़ते।

गतवर्ष सम्मेलन में भूतपूर्व गृह राज्य मंत्री श्री के० सी० पन्त का स्वागत

धार्मिक क्षेत्र में श्री सद्गुरू प्रताप सिंह जी ने सदैव सत्कार्यों तथा सदाचार को प्राथमिकता दी। वे अपने अनुयायियों के समक्ष उत्तम जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करके उन्हें ऊँचे आचरण तथा सच्चे व्यवहार का पाठ पढ़ाने के साथ ही थाईलैंड तथा अफ्रीका आदि विदेशों में बसने वाले भारतीयों के पास जाकर सात्विक, सादे तथा उच्चजीवन की प्रेरणा देते रहे।

अपने जीवन काल में सद्गुरू जी ने तीन बार श्री आदि ग्रन्थ जी के सवा-सवा लाख पाठ नामधारियों से करवाए तथा लाखों अखण्ड तथा साधारण पाठों की सम्पूर्ति के समय स्वयं दर्शन देकर श्रद्धालुओं को कृतार्थ किया। नाम-स्मरण तथा भजन-भगौतियों की अनवरत प्रवाहमान गंगा के आप प्रवर्तक तथा संरक्षक थे। आपका दृढ़ विश्वास था कि चाहे कोई ब्रह्म के किसी भी स्वरूप के प्रति आस्थावान हो, यदि वह नियमित रूप से अपने इष्ट के ध्यान में लीन होकर प्रतिदिन केवल एक घण्टा भी नाम स्मरण करता है तो वह इस मानव-जीवन का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

## संगीत मय जीवन

श्री सद्गुरु जी का सम्पूर्ण जीवन ही संगीत मय था। उनके जीवन की प्रत्येक

यातायात तथा जहाजरानी मंत्री श्री राणा जी का स्वागत करते हुए

गति-विधि, हर उतार चढ़ाव में संगीतात्मक समरसता कायम रहती। अमृतवेला (ब्रह्ममुहूर्त्त) में उठकर स्नान आदि से निवृत्तहोकर 'आसा दीवार' के कीर्तन से आपका दिन प्रारम्भ होता तथा रात्रि की शुरुआत भी संध्याकालीन कीर्तन-दीवान के साथ होती। इन दीवानों में प्रभात तथा रात के राग-समूहों का गायन होता। प्रतिभावान संगीत कलाकारों को सुनने के लिए सद्गुरु जी विशेष रूप से समय-निकालते। संगीत के सम्बन्ध में आपकी समझ तथा जानकारी पर विद्वान संगीतज्ञ भी आश्चर्य-चकित हो उठते।

भगवान श्री कृष्ण-के वंशी-वादन का मनुष्य तो क्या पशु-जीवन पर भी अत्यधिक प्रभाव था। इस तथ्य को आपने अपने अनुभव की साक्षी में समझा हुआ था। इसीसे आप कहा करते थे कि संगीत का पशुओं के शारीरिक विकास तथा उनके घी-दूध पर भी अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य को, जिसका उद्घाटन बहुत पहले ही सद्गुरु जी ने कर दिया था, आज विज्ञान वेत्ता भी स्वीकार करने लगे हैं।

रागी, रबाबी, ढाडी तथा शास्त्रीय संगीत कलाकार तो अपने मधुर कंठ-स्वर तथा संगीत.कला से आपको आनन्द मग्न करते ही रहते थे, स्वयं सद्गुरु जी भी अपने प्रिय वाद्य ताऊस की तारें छेड़ शब्द-कीर्तन द्वारा श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर देते। 'संगीत-विद्यालय' खोलकर आपने

वर्तमान श्री सद्‌गुरु जगजीत सिंह जी अपने प्रिय वाद्य यंत्र दिलरुबा पर मनोविनोद करते हुए

अपने दोनों साहबजादों तथा अन्य कई नामधारी युवकों को संगीत-महाविद्या का सुचारू ज्ञान कराया। उस ज्ञान की प्रमाणिकता आज श्री सद्‌गुरु जगजीतसिंह जी तथा श्री महाराज बीरसिंह जी में प्रत्यक्ष है।

## विश्व शाँति के समर्थक

श्री सद्‌गुरु जी विश्व-शाँति के उत्कट अभिलाषी थे। दो बड़े विश्व युद्धों में जिस प्रकार जवानों को तोपों का खाद्य बनना पड़ा, उसकी उनके हृदय में बड़ी चुभन थी।

यही कारण है कि उस समय भी जब देश की शान्ति समितियों तथा विश्व-शान्ति-कांग्रेसों को कुछ लोग रूसियों की एक चाल मात्र समझते थे, श्री सद्गुरु जी शान्ति-प्रयासों की महत्ता बड़ी गहराई से अनुभव करते थे। आप विश्व-शान्ति के क्षेत्र में अत्यन्त सक्रिय भाग लेते रहे तथा अपने साहिबजादों को भी विश्व-शान्ति अभियान में उन्होंने विशेष रूप से तथा बिना झिझक सम्मिलित किया।

शान्ति अथवा विश्व-शान्ति के अपने समर्थन की व्याख्या करते हुए वे कहा करते थे कि हमारे सभी कर्म-धर्म, सुख समृद्धि, व कल-कारखाने तभी सुरक्षित रह सकते हैं जब संसार में शान्तिमय वायु मण्डल बना रहे। वे सब राष्ट्र तथा व्यक्ति आदर के पात्र हैं जो सुख-समृद्धि को बढ़ाने के साथ-साथ शान्ति पूर्ण वायु मण्डल बनाए रखने तथा इसके क्षेत्र को विशाल से विशालतर करने के लिए इच्छुक तथा प्रयत्नशील हैं।

## आत्म-विलीनता

अपनी 69 वर्ष की जीवन-यात्रा में श्री सद्गुरु प्रतापसिंह जी ने बहुमुखी कार्य-क्रमों में सक्रिय भाग लिया जिसमें उद्यम, सूझबूझ तथा दूरदर्शिता का अद्भुत प्रयोग किया। 7 अगस्त 1959 के दिन जब वे शारीरिक रूप से सदैव के लिए हम से बिछुड़ गए तब भारत की इस महान, तेजस्वी, सात्विक, धार्मिक, सामाजिक एवं लोकप्रिय विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के हेतु कई सरकारी तथा गैर-सरकारी राजनीतिक पार्टियों, विभिन्न सभाओं, वर्गों व सम्प्रदायों के मुख्य प्रतिनिधियों तथा विभिन्न धर्म-गद्दियों के धर्म गुरुओं ने देश-विदेश से आकर श्री भैणी साहिब में एकत्रित डेढ़ लाख से भी अधिक व्यक्तियों को सम्बोधित किया।

ऐसे थे वे महान-उज्जवल शोभावान सूर्य सम श्री सद्गुरु प्रतापसिंह जी जिनकी आध्यात्मिक रुचियों के एक पहलु संगीत को लेकर वर्तमान श्री सदगुरु जगजीतसिंह तथा उनके श्रद्धालु नामधारी प्रतिवर्ष शास्त्रीय संगीत का यह अद्भुत आयोजन भारत के विराट नगर दिल्ली में करते हैं जिसमें शास्त्रीय संगीत के उत्कृष्ट कलाकार भाग लेने में गौरव का अनुभव करते हैं।

## कुछ उल्लेख वर्तमान का

श्री सद्गुरु प्रतापसिंह जी की पावन जीवन-गाथा के साथ ही कुछ उल्लेख वर्तमान सद्गुरु जी का भी समीचीन प्रतीत होता है। वर्तमान सद्गुरु जगजीतसिंह ने अपने पिता श्री जी की सम्पूर्ण बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक शक्तियों को विरासत में प्राप्त करते ही निज-लोक वासी श्री सद्गुरु जी के जारी किए समस्त कार्यों को पहले से भी अधिक सुचारु रूप से आगे बढ़ाया। संक्षेपतः आपने श्री जीवन-नगर क्षेत्र के निवासियों का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने तथा उनकी आर्थिक शक्ति बढ़ाने के लिए प्रयोगों द्वारा उत्तम सिद्ध हुए बीजों को कृषक-समाज में प्रचारित तथा वितरित किया। लोगों में बागवानी का शौक विकसित किया तथा समूचे क्षेत्र के लोगों के हृदयों में उद्यम तथा उत्साह के भाव जागृत करके सड़कों तथा रास्तों को पक्का करवाया। गांव-गांव में बिजली पहुंचाने के लिए श्री सद्गुरु जी ने सरकार तथा उसके विभागों को जन-कल्याण के कार्यों के लिए प्रेरित किया।

सद्‌गुरु जगजीतसिंह जी अपने अनुज महाराज वीरसिंह जी के साथ

'सद्‌गुरु हरिसिंह पशु-फार्म की उन्नति के लिए आपने अपने प्रयासों को निरन्तर जारी रखा फलस्वरूप अधिक दूध-उत्पादन के लिए आपके फार्म के पशुओं ने अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में बार-बार प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किए। पशु-उन्नति सम्बन्धी श्री सद्‌गुरु जी की उपलब्धियों को देखते हुए भारत-सरकार ने आपको 'गोपाल रत्न' की उपाधि से विभूपित कर गौरव का अनुभव किया।

श्री सद्‌गुरु जगजीतसिंह जी की उदारता, मिलनसार स्वभाव, निस्वार्थ सहायता तथा उद्यम-शीलता ने राजनैतिक, सामाजिक, तथा व्यक्तिगत जीवन पर विशेप प्रभाव डाला है। आपके ध्यान तथा स्नेह के पात्र लखपतियों से लेकर साधारण से साधारण व्यक्ति हैं।

पिता सद्‌गुरु जी की भाँति ही आप प्रतिदिन के धार्मिक कार्य क्रमों तथा सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हुए दिन तथा रात यात्रा में ही रहते हैं। एक शाही-जीवन की सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं के होते हुए भी आप सादा, सरल, अलबेले तथा त्यागी व्यक्ति हैं।

संगीत के प्रति स्वाभाविक ही आपकी गहरी रुचि है। आप अमृत वेला में स्नान आदि से निवृत हीकर नित्य अपने सखाओं तथा संगत सहित 'आसादीवार' के कीर्तन का श्रवण तथा गायन करते हैं। इसमें प्रातः कालीन रागों का स्वाभाविक ही कला पूर्ण उच्चारण हो जाता है। आप स्वयं जब अपने प्रिय वाद्य दिलरुबा पर गज संचालन करते हैं तो समंजित तरबें रस-रंग की दिव्य-संगीत-लहरियाँ आन्दोलित

भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति सन् 1973 के संगीत सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

कर देती हैं। आध्यात्मिक तथा सामाजिक कार्य-क्रमों में प्रवृत्त, देश व विदेश का भ्रमण करते समय जब कभी तथा जहाँ कहीं भी आपको कोई शास्त्रीय संगीत का विद्वान अथवा कलाकार मिल जाता है, उसे सुनने का मौका जैसे तैसे निकाल ही लेते हैं।

इस समय आपकी प्रेरणा तथा उद्यम के परिणाम स्वरूप दिल्ली, जालन्धर, अमृतसर, मन्डी (हिमाचल) तथा जम्मू में नामधारी बच्चों के लिए संगीत-विद्यालय चल रहे हैं। प्रथम श्रेणी के सितार-वादक उस्ताद विलायतखां साहिब जी के शिष्यत्व में उन्होंने कुछ प्रतिभाशाली बच्चों को भेजा हुआ है। इसी प्रकार कुछ बच्चे सरोद के बादशाह उस्ताद अमजद-अलीखां जी के शिष्यत्व में सरोद-वादन में शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। कुछ सम्भावना पूर्ण बच्चों के लिए दिलरुबा तथा तार-शहनाई वादन में प्रवीणता प्राप्त करने के हेतु दिल्ली के प्रसिद्ध शहनाई-वादक स० प्यारासिंह जी से सहयोग प्राप्त किया गया है। इसी प्रकार कुछ नामधारी बच्चों ने चोटी के तबला-वादक उस्ताद श्री प्रेमवल्लभ जी का शिष्यत्व प्राप्त किया है। इस प्रकार के संगीत सम्बन्धी कार्य क्रमों में यदि कभी कोई आर्थिक कठिनाई पेश होती है तो श्री सद्गुरु जी का खजाना उदारता पूर्वक अपना मुंह खोल देता है।

श्री सद्गुरु जगजीतसिंह जी के अनुज श्री महाराज वीरसिंह जी को पिता सद्गुरु जी द्वारा तबला-वादन में विशेष शिक्षण

सन् 1973 के सम्मेलन में श्री सद्गुरु जी प्रवचन करते हुए

उस समय के प्रसिद्ध कलाविदों से दिलाया गया था। श्री महाराज जी का तबला-वादन तथा गायन गत दो वार्षिक संगीतोत्सवों में कला-विज्ञों तथा श्रोताओं द्वारा खूब सराहा गया।

श्री महाराज बीरसिंह जी संगीत के प्रति अपने उत्कट लगाव के कारण ही गत संगीत-सम्मेलनों में प्रमुख-व्यवस्थापक का उत्तरदायित्व निबाहते रहे हैं। तथा इस बार भी इस विराट-संगीत समारोह के संचालन का सर्वाधिक उत्तरदायित्व आप ही के कन्धों पर है। श्री सद्गुरु जी ने श्री महाराज जी के सुपुत्रों श्री ठाकुर दलीपसिंह जी तथा ठाकुर उदयसिंह जी को गायन तथा वादन का श्रेष्ठ शिक्षण देने का प्रबन्ध किया है।

अन्त में इतना और कहना उचित प्रतीत होता है कि श्री सद्गुरु जगजीतसिंह जी संगीत को आत्मा की खुराक समझते है तथा ऐसे समय की कामना करते हैं जब कि प्रत्येक भारतीय शास्त्रीय संगीत को सुन, समझ तथा गा सकने में समर्थ हो सके।

अनुवाद: सुखबीरसिंह गुलाटी
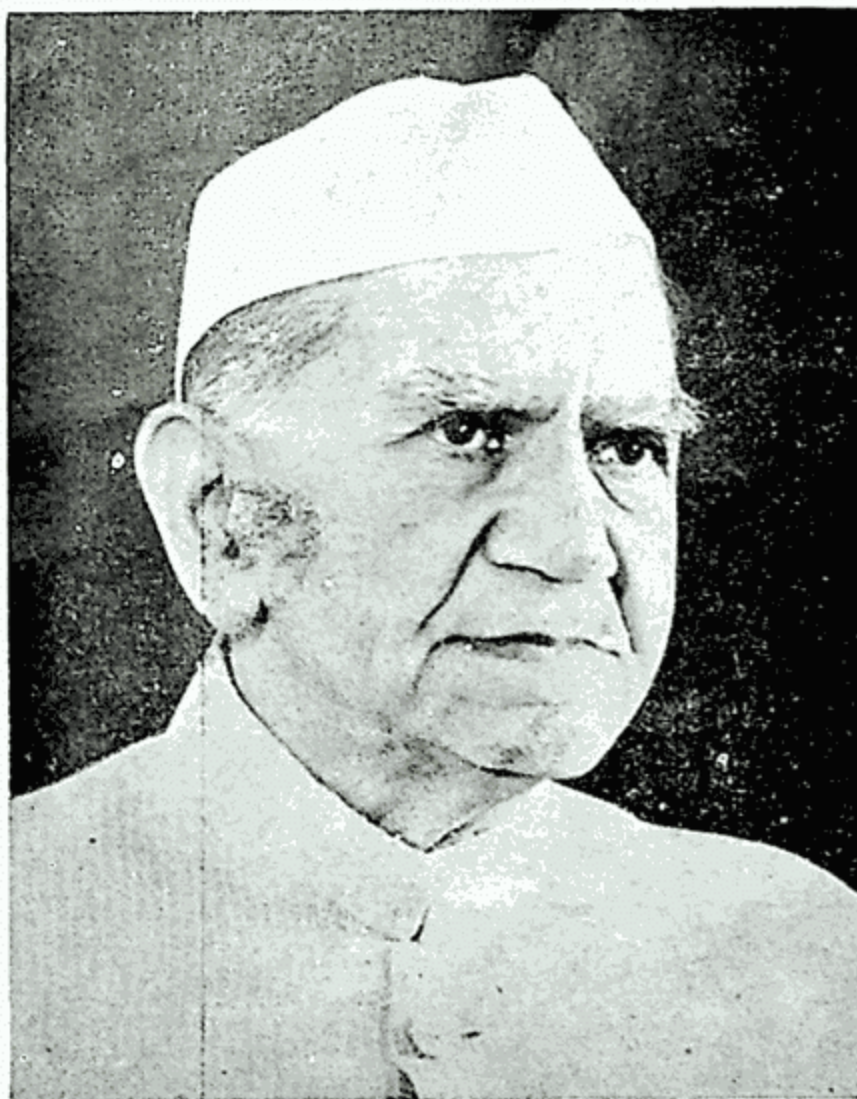
राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली-110004
Rashtrapati' Bhawan
New Delhi-110004 India
March 7. 1975

I am glad to know that the Namdhari Sangat is organising a Festival of Indian Classical Music in memory of the Late Satguru Pratap Singh in New Delhi. I offer my tribute to this great musician on the occasion and wish the Festival all success.

F. A. Ahmad

उस्ताद अमजद अली खां सद्‌गुरु जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

## कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 15 मार्च, 1975 | 6 00 से 6.30 | उदघाटन |
| साँयकाल | 6.30 से 7.00 | महाराज वीरसिंह तथा साथी (गायन) |
| | 7.00 से 7.45 | प्रोफेसर सुनील बोस (गायन) |
| | | श्री नवाब खान (तबला) |
| | | श्री साबरी खान (सारंगी) |
| | 7.45 से 8.30 | श्री सुजात हुसैन खान (सितार) |
| | | श्री गोपाल बैनरजी (तबला) |
| | 8.30 से 9.45 | श्री राम चतुर मलिक (ध्रुवपद) |
| | | स्वामी राम शंकर ((पखावज) |
| | 9.45 से 10.00 | मद्यांतर |
| | 10.00 से 11.30 | श्री बिरजू महाराज (नृत्य) |
| | | पं० कृष्ण महाराज (तबला) |
| 16 मार्च, 1975 | 8.30 से 8.50 | अमरजीतसिंह (वायलिन) |
| प्रात: काल | | बलवीरसिंह (तबला) |
| | 8.50 से 9.45 | सरदार प्यारासिंह (दिलरुबा) |
| | | पं० प्रेम वल्लभ (तबला) |
| | 9.45 से 10.05 | स्वामी राम शंकर (पखावज) |
| | 10.05 से 10.20 | मद्यांतर |
| | 10.20 से 10.45 | श्री हरभजनसिंह तथा साथी (गायन) |
| | 10.45 से 12.30 | उस्ताद बिसमिल्लाह खान (शहनाई) |
| 16 मार्च, 1975 | 6.30 से 7.30 | श्री राजन मिश्र तथा श्री साजन मिश्र (गायन) |
| साँयकाल | | पं० प्रेम वल्लभ (तबला) |
| | 7.30 से 8.15 | श्री गुरुदेवसिंह (सरोद) |
| | | श्री गोपाल बैनरजी (तबला) |
| | 8.15 से 9.00 | श्री महिन्दरसिंह (गायन) |
| | | श्री अवतारसिंह (तबला) |
| | | श्री इन्दर लाल (सारंगी) |
| | 9.00 से 9.15 | मद्यांतर |
| | 9.15 से 9.30 | महाराज वीरसिंह तथा साथी (ध्रुवपद) |
| | 9.30 से 11 30 | उस्ताद विलायत हुसैन खान (सितार) |
| | | श्री असलम खान (तबला) |
| 17 मार्च, 1975 | 5.30 से 6.00 | शब्द गायन |
| साँयकाल | 6.00 से 6.00 | राष्ट्रपति श्री फखरूद्दीन अली अहमद का स्वागत |
| | 6.20 से 6.30 | महाराज बीरसिंह तथा साथी (ध्रुवपद) |
| | 6 30 से 8.30 | उस्ताद अमजद अली खाँ (सरोद) |
| | | पं० कृष्ण महाराज (तबला) |
| | 8.30 से 8.45 | मद्यांतर |
| | 8.45 से 10.45 | पं० कुमार गांधर्व (गायन) |
| | | श्री वसन्त अचरेकर (तबला) |

Printed at World Science News Press, Delhi-110005. Phone : 562729.

## उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

यह श्रेय केवल उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को ही प्राप्त है कि उन्होंने शहनाई को एक सम्पूर्ण संगीत-वाद्य के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। इससे पूर्व शहनाई को इस योग्य नहीं समझा जाता था कि उसकी परिधि में शास्त्रीय संगीत की सभी जटिलताओं को समाहित किया जा सके।

बिस्मिल्ला खां का जन्म 21 मार्च, 1916 को डुमराओं (बिहार) में हुआ। 1923 में वे अपने मामा, स्वर्गीय श्री अलीबक्श से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए वाराणसी आ गए। उनके मामा बनारस के प्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर के

शहनाई वादक थे। शहनाई वादन बाप-दादाओं के समय से ही इस परिवार की शान मानी जाती थी।

उस्ताद बिस्मिल्ला खां शीघ्र ही शहनाई वादक के रूप में स्थापित हो गए और आज उन्हें देश के सर्वाधिक सम्मानित कलाकारों में स्थान प्राप्त है। उन्होंने तथा उनके स्वर्गीय भाई शम्सुद्दीन खां ने शहनाई के सम्बन्ध में बने हुए पूर्वाग्रहों तथा रूढ़ियों को तोड़ने के लिए भरसक प्रयत्न किए तथा अन्ततः वे अपने प्रिय वाद्य के लिए संगीत जगत में गौरव तथा आदर का स्थान प्राप्त करने में सफल हुए।

अप्रैल 1956 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1961 में उन्हें पद्म श्री का सम्मान प्रदान किया गया तथा उसी वर्ष राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थान ने उन्हे 'अखिल भारतीय शहनाई चक्रवर्ती' की उपाधि से विभूषित किया।

उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने दूर-दूर तक भ्रमण किया है। उन्होंने अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मध्य पूर्व, दूर पूर्व जापान, यूरोप, कैनाडा, संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत संघ की यात्राएं की हैं। 1965 में उन्होंने एडिनबर्ग फैस्टीवल में, कामनवैल्थ के आर्ट्स फैस्टीवल में तथा कैनेस में हुए यूनैस्को फैस्टीवल में भाग लिया।

## उस्ताद विलायत हुसैन खां

आपका जन्म 1928 में हुआ । आप संगीतज्ञों के एक परिवार की छठी पीढ़ी में आते हैं । पिता से शिक्षा लेने के अतिरिक्त सितार वादन में विलायत खां को उस्ताद बन्दे हसन खां और उस्ताद वहीद खां ने भी पथप्रदर्शित किया । विलायत खां के पिता प्रसिद्ध इनायत खां विशुद्ध सितार-शैली के प्रवर्तकों में से माने जाते हैं । विलायत खां की ख्याति विश्व के बहुत से देशों में फैल चुकी है । सफल राग विकास में तकनीकी निपुणता और अपने वाद्य पर अधिकार का आप सूक्षम समन्वय पैदा करते हैं—आपने आज के सितार वादन को महत्वपूर्ण योगदान दिया है । विशेष रूप से वादन के तकनीकी पक्ष में, 'गायकी अंग' आपकी मौलिक शैली से अभिन्न रूप से जुड़ गया है । उस्ताद विलायत खां ने संगीतज्ञों की युवा पीढ़ी को प्रेरित किया है और बहुत से शिष्यों को प्रशिक्षित किया है । भारत के समकालीन संगीत मंच पर आपका प्रभाव व्यापक है ।

तबला वादक :

**श्री असलम खां**

## श्री बिरजू महाराज

श्री बिरजू महाराज विख्यात कालमा बिन्दाविन खानदान के सबसे छोटे कलाकार हैं जहाँ यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी चली आई है और इन्होंने अपने योग्य पिता श्री अच्चन महाराज से कत्थक कला की विद्या प्राप्त की और इस कत्थक नृत्य में विभिन्न भाव भंगिमाओं में विशेष रुचि बढ़ाई। अपने इस ज्ञान और निजी कला से बिरजू महाराज ने कत्थक कला को एक नया रूप दिया है इन्होंने स्वदेश तथा बाहर के देशों में अपने नृत्य के बहुत अधिक प्रदर्शन किये है। इन्होंने नृत्य को नृत्यनाटक में बदलने में काफी निपुणता पाई है। इस कला के लिए इन्होंने राग और ध्वनि दोनों का प्रयोग किया है। इनकी योग्यता का प्रमाण इसी में है कि 28 साल की उम्र में संगीत नाटक एकेडमी का कत्थक नृत्य में पुरस्कार पाया।

पिछले दिनों भारत सरकार तथा एशिया सोसायटी (न्यूयार्क) के निमन्त्रण पर इन्होंने रूस तथा अमेरिका में अपनी कला को वहाँ पहुंचाया। उन्होंने जनता प्रदर्शन के अतिरिक्त वहाँ के विश्व विद्यालयों में उच्च शिक्षा की क्लासों में भारत की इस प्राचीन कला की शिक्षा दी।

तबला वादक :

**श्री कृष्ण महाराज**

## उस्ताद अमजद अली खाँ

उस्ताद अमजद अली खाँ, जिनका जन्म 9 अक्टूबर, 1945 में हुआ, उस्ताद हाफिज अली खाँ के सबसे छोटे पुत्र हैं। उनकी प्रतिभा असाधारण है। केवल पांच वर्ष की आयु में उनकी सरोद-शिक्षा प्रारम्भ कर दी गई तथा दस वर्ष की आयु में ही वे सार्वजनिक मंच पर उपस्थित होकर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे। और पन्द्रह वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते वे उस्ताद सरोदवादक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए'।

अमजद अली खाँ जी के व्यक्तित्व में अनेक विरोधाभासी पहलू हैं। एक ओर शास्त्रीय संगीतकार के रूप में वे कट्टर परम्परावादी हैं, दूसरी ओर सृजनशील कलाकार के रूप में वे अत्यन्त प्रगतिवादी भी हैं। इसीलिए वे भारत के सर्वाधिक

लोकप्रिय संगीतकार होने के साथ-साथ सर्वाधिक विवादास्पद भी हैं।

उन्होंने सरोदवादन में ख्यालशैली का संयोग करके एक नूतन-पद्धति का सूत्रपात किया है जिसके लिए उन्हें भारी मान्यता तथा प्रशन्सा प्राप्त हुई है, इस प्रकार सरोद-वादन में गायन की सूक्ष्म-तथा विशिष्ट सुन्दरताओं को समाविष्ट करके उन्होंने सरोद के रचनात्मक क्षेत्र को विस्तृत कर दिया है। उनकी "एकहरा तानों", "गमक" तथा लय-कौशल में भी गायन संगीत के अलंकरणों को देखा जा सकता है।

अमजद अली खां ने मई-मास में पराग में मनाए गए Spring Festival में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। इससे पूर्व वे शेराज फैस्टीवल में भाग लेने के लिए ईरान गए थे। इसके अतिरिक्त मारीशस, अफगानिस्तान तथा संयुक्त राज्य अमरीका में भी वे सरकारी प्रतिनिधि के रूप में भ्रमण कर चुके हैं। सन 1971 में पेरिस में हुई अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्हें यूनैस्को पुरस्कार प्रदान किया गया।

उस्ताद अमजद अली खां ने अपने सेनिया-बीनकार घराने में चले आ रहे शास्त्रीय संगीत के मूल रूप को अक्षुण्ण रखने के साथ-साथ हरिप्रिया, सुहाग-भैरव, विभावरी, चन्द्रध्वनि, मन्दसमीर तथा किरण-रंजिनी रागों का भी प्रणयन किया है।

इसी वर्ष उन्हें "पद्मश्री" उपाधि से विभूषित किया गया है। तथा आजतक इस राष्ट्रीय सम्मान के प्राप्तकर्त्ताओं में वे सबसे कम आयु के हैं।

## पंडित रामचतुर मलिक

पंडित रामचतुर मलिक विहार राज्य के विख्यात संगीतज्ञ परिवार से संबंधित हैं। उन्होंने तथा उनके पूर्वजों ने भूपतखां से गान विद्या सीखी परन्तु बाद में उन्होंने अपनी ही कला को श्रेष्ठता दी। आज भी बिहार में ध्रुपद राग गाने वाला मलिक घराना जाना जाता है।

पंडित जी का जन्म 5 अक्टूबर 1905 में दरभंगा जिले के आम्ता नामक गांव में हुआ। पंडित मलिक जी बचपन से ही चमत्कारिक संगीतज्ञ थे। प्रशिक्षण लिए बिना ही इन्होंने 5 साल की अवस्था में ध्रुपद राग से अपने पिता को आश्चर्य चकित कर दिया था। पंडित जी 15 ने

साल की उम्र में राग और रागनियों का जनता के सामने प्रदर्शन किया।

सन् 1924 में दरभंगा के स्वर्गीय महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह बहादुर की सभा में संगीतज्ञ रहे। पंडित मलिक जी ने इंगलैंड, फ्रांस तथा अन्य योरोपीय देशों में भ्रमण करके गानविद्या में प्रशंसा पाई।

भारतीय जनता से प्रशंसा पाकर कान्फ्रेंस-कमेटी से स्वर्णपदक मिला। आज पंडित रामचतुर मलिक भारत के वरिष्ट संगीतज्ञ हैं। 1953 में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेप्रसाद द्वारा नृत्य तथा संगीत में नगद पुरस्कार प्राप्त किया।

पंडित मलिक जी ने अपने गांव में संगीत प्रेमियों के लिए एक विद्यापीठ की स्थापना भी की। ध्रुपद तथा धमार राग में श्री मलिक जी ने महान सफलता पाई है। 21 अप्रैल 1970 को भारत के राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी ने पंडित रामचतुर मलिक को "पद्मश्री" की उपाधि से विभूषित करके उनको हार्दिक सम्मान दिया। तथा उसी वर्ष उन्हें संगीत नाटक एकेडमी का पुरस्कार प्रदान किया।

## प्रो० सुनील के० बोस

सुनील के बोस ख्याल, ठुमरी और सुगम संगीत के कुशल गायक हैं । आपने अभी हाल ही में आल इण्डिया रेडियो दिल्ली के डायरेक्टर पद से अवकाश ग्रहण किया है। आप विद्यार्थी अवस्था से ही अपना कार्यक्रम रेडियो स्टेशन से देते रहे हैं। आपने भारत एवं विदेशों में होने वाली बहुत सी संगीत सभाओं में भाग लिया। आपके बहुत से ग्रामोफोन रिकार्ड भी हैं। आपने बाल्यकाल से ही बहुत से प्रसिद्ध संगीतकारों से गायन विद्या सीखी। जिनमें कलकत्ता के स्वर्गीय गिरजा शंकर चक्रवर्ती भी हैं। आपने ठुमरी में पर्याप्त खोज की है।

## श्री कुमार गन्धर्व

संगीत में आपने एक नया ही ढंग निकाला जो बिल्कुल प्राकृत ही नहीं प्रवाहित रूप से गतिमान होता हुआ अपनी प्राचीन कला को दर्शाता है। इनके संगीत को सुनकर श्रोता गण मुग्ध हो जाते हैं।

अपनी स्वर लहरियों में प्रवेश करते ही संगीत के क्षितिज पर पहुँच कुमार गन्धर्व दैदीप्यमान हो जाते हैं। आपका संगीत मनोभावों को प्रभावित करता है। इस वर्ष आपको संगीत नाटक एकेडमी का राष्ट्रपति पुरस्कार मिला।
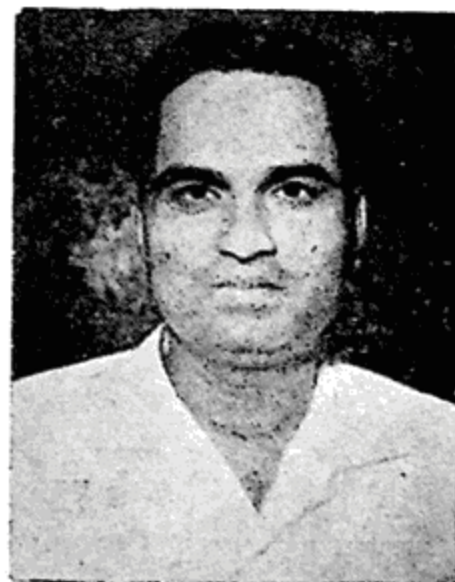
## युगल संगीत साधक

गुरुदेव सिंह तथा हरभजन सिंह दो ऐसे संगीत साधक हैं जिनको एक दूसरे से अलग करके देखना और जिनका अलग अलग परिचय देना कठिन है। यह दोनों युवक एक ही गांव (संतनगर जिला हिसार) के हैं, इन्होंने एक साथ ही शुरू से संगीत की शिक्षा आरंभ की, तथा एक साथ ही संगीत की साधना की है। धर्म के क्षेत्र में दोनों 'नामधारी' हैं तथा दोनों को ही श्री सद्‌गुरु जगजीत सिंह जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त है।

सद्‌गुरु जगजीत सिंह जी भी अपने पूज्य पिता स्वर्गीय श्री सद्‌गुरु प्रताप सिंह की

हरभजन सिंह

तरह ही संगीत से विशेष प्रेम रखते हैं तथा चाहते हैं कि नामधारी युवक अधिक से अधिक संगीत के क्षेत्र में जायें। आप की इसी इच्छा तथा आशीर्वाद से इन दोनों युवकों ने स्वर्गीय पंडित महादेव प्रसाद कत्थक जी से संगीत की शिक्षा आरंभ की तथा ध्रुवपद धमार में विशेष दक्षता प्राप्त की। गुरुवाणी संगीत की पंजाब में एक विशेष परंपरा है जिसे रबाबी गाया करते थे और आज कल जिसे श्री महाराज वीर सिंह जी बड़े यतन से संभाले चले आ रहे हैं। उसकी शिक्षा इन दोनों युवकों ने महाराज वीर सिंह जी तथा सेठ चंद्र हंस जी से प्राप्त की।

वाद्य संगीत में दिलरुबा की शिक्षा इन्होंने उस्ताद तारा सिंह जी रागी से शुरु की जिसको गुरुदेव सिंह ने तो आगे बढ़ाया पर हरभजन सिंह की रुचि गायन में बढ़ गई। गुरुदेव सिंह ने दिल्ली में आकर उस्ताद प्यारा सिंह जी से तार शहनाई में विशेष योग्यता हासिल की जबकि हरभजन सिंह गायन की साधना करते रहे तथा उसी क्षेत्र में आगे बढ़ गये।

उस्ताद प्यारा सिंह जी की प्रेरणा से ही गुरुदेव सिंह ने उस्ताद अमजद अली खां साहिब से सरोद बजाने की शिक्षा आरंभ की। तथा गुरुदेव सिंह की प्रेरणा से हरभजन सिंह ने भी दिल्ली में आकर उस्ताद अमजद अली खां साहिब को ही सितार का गुरु बना लिया फिर एक बार यह दोनों युवक एक ही गुरु के शिष्य बन कर सरोद और सितार की शिक्षा हासिल करने लगे जो कि अब तक कर रहे हैं।

आप दोनों से श्री सतगुरु जी की कृपा द्वारा संगीत के क्षेत्र में बहुत आशायें हैं।

गुरदेवसिंह

## "राजन सिंह मिश्रा" और "साजन मिश्रा"

राजन सिंह मिश्रा 24 साल के युवक हैं। यह सामाजिक ज्ञान में एम० ए० हैं। साजन मिश्रा इनके छोटे भाई हैं और यह कुल 18 साल के है तथा बी० ए० हैं। दोनों का ही जन्म पवित्र स्थान वाराणसी में हुआ। इन्होंने अपने पिता पंडित हनुमान मिश्रा से संगीत शिक्षा पाई लेकिन गंडा उत्सव इन्होंने स्वर्गीय पंडित वड़े रामदास जी वनारस से कराया। यह प्रसिद्ध थप्पा घराने से सम्बन्धित हैं। लेकिन इनका घराना ख्याल घराने से भी जाना जाता हैं।

इन्होंने अपनी कला के जगह-जगह प्रदर्शन किये। जिसमें अमृतसर में राजसभा (1968, 1974) वम्बई में रासेक संगम (1974), कलकत्ता में म्यूजिक कान्फ्रेंस (1973, 74), इलाहाबाद में संगीत समिति कान्फ्रेंस (1974), अहमदाबाद में श्री सद्गुरू संगीत सम्मेलन (1974) तथा जयपुर आदि हैं।

## सुजात हुसैन खाँ 'दिलबाग सिह'

जैसा बाप तैसा बेटा, निपुण तथा योग्य बाप उस्ताद विलायत खाँ के सुपुत्र सुजात हुसैन खाँ केवल चौदह साल की आयु में नाम पैदा कर चुके हैं। सितार के विशेषज्ञों का कहना है कि उनकी 'तानकारी, लयकारी तथा ठोक झाला' सितार की कुछ विशेषताएं हैं। उन्होंने न केवल भारतवासिओं को ही अपने सितार वादन से रिझाया है अपितु विदेशों में भी अपने कारनामें दिखाए हैं। अपने कंधों पर इन्होंने अपने पूर्वजों की सितारवादन में निपुणता का बोझ भली भांति सम्भालने का प्रयास किया है। छः पीढ़ियों से आता हुआ सितारवादन का यह अपनी ही प्रकार का एक कुटुम्ब है। ऐसी आशा है कि सुजात हुसैन खाँ अपनी तरह के एक ही सितारवादक होंगे जो कि इस कुटुम्ब की सातवीं पीढ़ी के भावों को निभाते हुए सितार की दुनिया को एक नया रूप देंगे।

इनके साथी हैं तबला वादक :
**उस्ताद सफात खाँ**

## सरदार प्यारा सिंह

आपका जन्म जनवरी 1924 में हुआ। आपके पिता पितामह पश्चिमी पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध संगीतकार थे। इन्होंने दिलरुबा बजाने और गाने की आरंभिक संगीत शिक्षा अपने पिता सुप्रसिद्ध संगीतकार भाई केसर सिंह जी रागी से प्राप्त की। भाई केसर सिंह जो खान साहिब मौला बक्श तलवन्डी वालों के शिष्य थे। सरदार प्यारा सिंह जी ने अपनी संगीत शिक्षा पंडित कीर्ति रत्न शर्मा के संरक्षण में संपूर्ण की।

आपने 1947 में आल इण्डिया रेडियो, लाहौर में दिलरुबा वादन का काम आरम्भ किया। कुछ समय के लिये श्री दरबार साहिब, अमृतसर में भी दिलरुबा वादन करते रहे, तत्पश्चात् अगस्त 1947 में आपने आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से दिलरुबा बजाना आरम्भ किया। तब से ही आप अपने मनोहर दिलरुबा और तार शहनाई वादन से श्रोताओं की सेवा कर रहे हैं। भिन्न भाषाओं में गायकी की मधुर ध्वनि प्रसारित करने का भी अधिकार आपको ही प्राप्त है। आपने विदेशों में भी संगीत सम्बन्धित यात्रायें कीं। 1959 में आप काबुल गये। 1966 और 1971 में आपने इंगलैण्ड की यात्रा की। जहां भी आप किसी अन्य देश में गये वहीं संगीत प्रेमियों ने आपका भव्य स्वागत किया।

आप एक उत्तम लेखक भी हैं और आपने एक पुस्तक "गुरशबद संगीत" प्रथम भाग लिखी है। आपने काबुल, मलेशिया और यूरोप का दौरा किया। आपने वहाँ भी लोकप्रियता प्राप्त की। दिल्ली से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका "शोभा" ने 1974 में आप को सर्वश्रेष्ठ दिलरुबा वादक के लिए पुरस्कृत किया है।

## स्वामी पागलदास

अयोध्या के स्वामी पागलदास विख्यात पखावज वादक हैं। मृदंग वाद्य द्वारा इन्होंने भारतीय संगीत को जनता के हृदय में बड़े सुन्दर ढंग से उंडेला है। कोई संदेह नहीं कि स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन मृदंग वादन में ही लगा रहा और अपने इस क्षेत्र में वे राजा ही रहे। पूरे संसार के वाद्यवादन की सूचि में स्वामी जी एक अच्छे लेखक, उत्तीर्ण शिक्षक हैं। इनके चेले भारत में ही नहीं विदेशों तक में हैं। यह तबला वादन में भी उसी तरह निपुण हैं। उस्ताद अलाउद्दीन के शब्दों में "स्वामी पागलदास" ने मृदंग को नया जीवन प्रदान किया है।
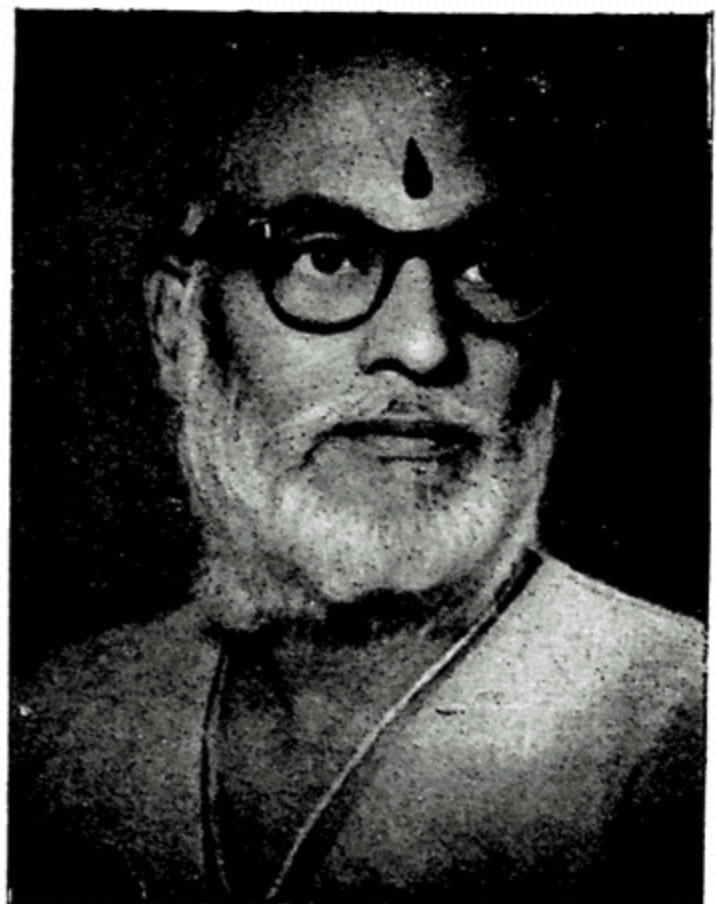
## श्री मोहिन्द्रसिंह

मोहिन्द्रसिंह जी विख्यात ठुमरी गायक हैं यह श्री भगतसिंह संगरा जालन्धर के चेले हैं। संगीतज्ञ पं दिलीप चन्द्र वेदी से इन्होंने विशेष शिक्षा ग्रहण की।

इनके साथी हैं तबला वादक :
**श्री अवतारसिंह**

## आनंद गोपाल बन्दोपाद्य

आनन्द गोपाल जो कि सामान्यतः गोपाल के नाम से विख्यात हैं बहुत ही योग्य तबला वादक हैं। आपका जन्म एक प्रसिद्ध संगीतकार घराने में हुआ। आपने संगीत शिक्षा अपने गुरु पंडित महादेव प्रसाद मिश्रा जी बनारस वालों से प्राप्त की। आपने कई बार आल इन्डिया रेडियो स्टेशन की प्रतियोगिताओं में इनाम जीते। और आप कई बार विदेश भी गये।
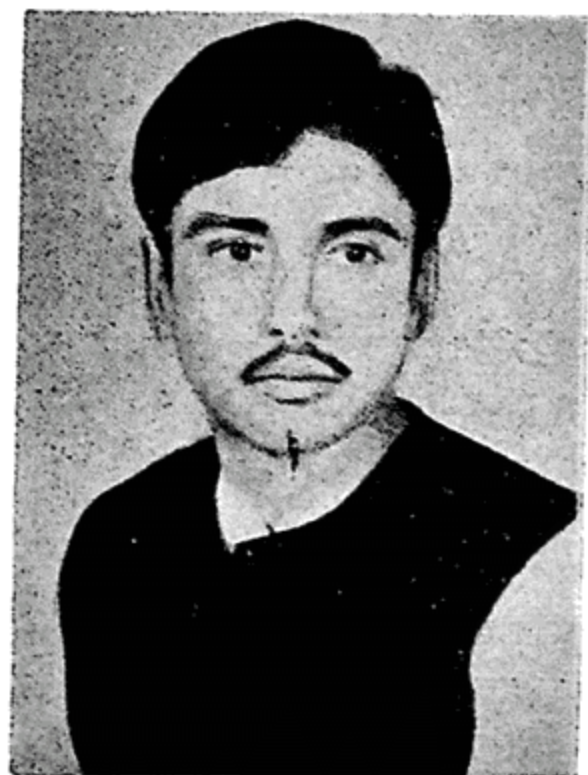
## श्री नबाब खां

श्री नबाब खाँ मशहूर तबला वादक हैं। इन्होंने तबला उस्ताद अलरखां खाँ से सीखा जो इनके ताऊ जी भी थे तथा उस्ताद भी। इन्होंने कजरोंटी घराना आफा हुसैन घराना, हमीर हसन खाँ बम्बई उसके बाद मेरठ में न्याज़ खाँ तथा बाद में अलरखां खाँ बम्बई वाले से सीखा। यह सभी घराने बजाने में उस्ताद हैं। संगीत की शुरुवाद इन्होंने घर से ही की। बाद में उस्ताद चाँद, उस्ताद अमीर खां से गान विद्या पाई।

## प्रेम वल्लभ

आप मथुरा के सुप्रसिद्ध पखावज वादक श्री चिरंजीलाल के पौत्र हैं। सर्वप्रथम आपने तबला तथा पखावज वादन की शिक्षा अपने पूज्य पितामह से प्राप्त की और फिर देश के अग्रणी तबलावादक उस्ताद अहमद जान "थरकवा" से तबलावादन का प्रशिक्षण ग्रहण किया। गायन तथा वाद्य संगत पर आप समान अधिकार रखते हैं। अपनी कला द्वारा जनता को मंत्रमुग्ध कर देने में आप विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। आजकल आप आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से सम्बन्धित हैं।

1955 में भारत का जो सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल चीन गया था आप उसके सदस्य थे।

## साबरी खान

श्री साबरी खान का जन्म 1921 में मुरादाबाद (उ० प्र०) में हुआ। आपके पिता उस्ताद छज्जू खान और दादा उस्ताद हाजी मुहम्मद प्रसिद्ध संगीतकार थे। आपने कई बार सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ सारंगी की संगत की जिसमें यहूदी मिनू हीन भी शामिल हैं।

विदेशी महानुभावों को आपका सारंगी वादन सुनवाने के लिये कई बार प्रधान मंत्री के गृह और राष्ट्रपति भवन में भी आपको बुलावा दिया गया। श्री साबरी खान रूस, अमेरिका, इंग्लैण्ड और अफगानिस्तान की यात्रा भी सारंगी वादन के उपलक्ष्य में कर चुके हैं।

## "सारंगी वादक" श्री इन्दरलाल धांधरा

आपने राजस्थान के उदयपुर के संगीतज्ञ परिवार में जन्म लिया। भारत के कुशल सारंगी वादक पिता से इन्होंने 7 साल की अवस्था में शिक्षा प्राप्त की। आगे चलकर पंजाब के श्री दलीप चन्द्र वेद जी से संगीत शिक्षा ली। इन्दरलाल जी अब नई दिल्ली आल इंडिया रेडियो के स्टाफ कलाकारों में से हैं। यह भारत में ही नहीं विदेशों के संगीत सम्मेलनों में भाग लेते रहे हैं। इन्दरलाल जी बड़े सुन्दर ढंग से सोलो वजाते है। इनकी सारंगी की धुन उचित तथा उच्च ढंग से मुखरित होती है।

SHANKAR'S WEEKLY

April 28, 1974

**MUSIC**

# Satguru Sangeet Sammelan

Namdharis are a dedicated lot. There is a sublime perfection in whatever they do. No wonder the three-day music festival which they organised at the Mavalankar auditorium in memory of Satguru Partap Singhji was a well-thought-of august affair. Big names and budding artists took part and for once the common man had an opportunity to hear them all for no price. A notable achievement indeed! Congress chief Dr. Shankar Dayal Sharma inaugurated the festival with an inspiring intro.

Dhruvpad singing by Harbhajan Singh and party ushered in the festival. It was a serious effort marred by unimaginative percussion support by Maharaj Bir Singhji. Within a short span of time he changed his instruments umpteen times. His playing was thoroughly disgusting. Master Rattan was the next artist who gave two khayals in *Puriya-Dhanashri*.

Gifted with a voice capable of spanning different octaves with ease and efficiency, he presented a brilliant exposition of the raga. With his keen rhythmic sensibility and vigorous sargams he lit the khayals with pleasing hues. The faster khayal was a splendid exercise in speed.

What I disliked was his menacing gestures and meaningless mannerisms. To bring in graces one need not get convulsions! Anantlal chose Aimen for playing on the shahnai. I liked his dhun better. Gurdev Singh, a disciple of Amjad, shaped well on the sarod He has imbibed his master's delicate and deft touches. Bhimsen Joshi was his usual self and turned in a memorable concert. Sunil Bose's thumri and Asad Ali (Been) were lively. Pt. Ram Narain made his sarangi literally sing. Absolutely fantastic is his playing range.

Sunday morning we heard the unbeatable Ustad Vilayat Khan (sitar). He played a variant of *Sarang*. Both alap and gats were marked by mastery *non-pareil*. We heard Tewari in the evening elaborating *Shudh-Kalyan* Ably assisted by Pagal Das on Pakhawaj, Tewari's concert was virile and vibrant. Namdhari Samaj deserves our gratitude for organising such a splendid show.

INDIAN EXPRESS
April 24, 1974

MUSIC

# *Namdhari Sangeet Sammelan*

The Sangeet Sammelan, organised by the Namdhari sect in memory of their guru at Mavalankar auditorium featured among others, Bhim Sen Joshi (vocal) and Amjad Ali Khan (Sarod).

On the opening day, Bhim Sen Joshi took up Malkauns for detailed exposition and on the closing day, Amjad Ali Khan played Chandradhwani, his own creation. Jasraj sang Bageshwari. Though his singing was much below his own standard, his oft-repeated composition "Jai mata kalika" was bright and lyrical.

Perhaps to enjoy the liberty in execution, Ustad Vilayat Khan announced the name of a raga he played as a variety of Sarang. But after listening to the maestor, it appeared that he is losing his freshness in swar.

Maharaj Bir Singhji sang a dhrupad in the purest and traditional style. Other impressive items included Amarjeet Singh's vocal recital, who sang Bilaskhani Todi. He unfolded it very intelligently. Gurdev Singh's sarod recital was another inspiring item.

Prakash Wadhera's flute recital was also enjoyable. He played raga Deepwali, a creation of the late veteran Pannalal Ghosh.

EVENING NEWS
April 18, 1974

# Music festival

The Namdharis, a sect among the Sikhs, who claim to be carrying on the tradition of Guru Nanak, have maintained the musical tradition of Punjab. Since last year, they have begun holding a festival of classical music in the Capital to encourage those talented among them. Leading exponents of contemporary classical gharanas are also invited. These concerts are meant for all music-lovers and there is no admission price.

Satguru Pratap Singh, father of the present Satguru Jagjit Singh, was especially fond of music. He learnt Dilruba himself. His teachers were Bhai Mastaan Singh of Patiala and Bhai Kaluji of Narowaal. Satguru Jagjit Singh plays the Dilruba in a unique way —on the resonant strings (Tarabs) of the instrument. He has learnt the Dilruba from Bhai Taban Rababi, and the Pakhawaj from Bhai Nasir.

This year's music festival, in honour of Satguru Pratap Singh, is being held at Mavalankar auditorium on April 19, 20 and 21.

Artists like Ustad Vilayat Khan, Bhim Sen Joshi, Pt. Jasraj along with many young aspirants are participating in it.

Information and Broadcasting Minister I. K. Gujral will inaugurate the festival.

AMAR JEET SINGH

दिनमान तिथि 12 मई 76

## सतगुरू समारोह

मावलंकर भवन में आयोजित श्री सतगुरू प्रताप सिंह जी की स्मृति संगीत समारोह में इस वर्ष 25 मुख्य कलाकारों तथा अनेक संगतकारों ने भाग लिया। जहां पुराने तथा प्रतिष्ठित कलाकारों के कई कार्यक्रम स्मरणीय रहे वहीं एक दो नये कलाकारों के भी जिस पैमाने पर तथा जिस खुले ढंग से यह संगीत समारोह आयोजित किया गया, प्रशंसनीय था, पर तीन दिन में 25 कलाकार अधिक थे।

प्रतिष्ठित तथा परिचित कलाकारों में पं. भीमसेन जोशी द्वारा ख्याल मालकौंस और जोगिया, पं. जसराज द्वारा बागेश्वरी तथा लक्ष्मण कृष्ण पण्डित द्वारा तोड़ी में गायन तथा पं. रामनारायण और उस्ताद अमजद अली खां द्वारा क्रमशः सारंगी तथा सरोद पर सरस्वती और चंद्रध्वनि, अभोगी तथा भैरवी की अवतारण बहुत ही उच्च-कोटि की थी। समारोह में भाग लेने वाले वरिष्ठ तथा पुरानी पीढ़ी के पंजाब के गायक मास्टर रतन को दिल्ली में सुनने का अवसर पहली बार मिला। मास्टर जी द्वारा ख्याल पूरिया धनाश्री तथा ठुमरी मिश्र खमाज निसंदेह श्रेष्ठ गायन की उदाहरण थी। गायकी का निजीपन, सरगम और बोलतान कहने का प्रभावशाली मोहक ढंग तथा रियाजी हलक तथा गमक तानों का तांता निराला ही समां बाँधने वाला था। जैन कुमार जैन द्वारा मंद मधुर वाद्य संतूर पर बैरागी, गुरुदेव सिंह की सरोद पर दुर्गा तथा अनंत लाल और साथियों की शहनाई पर एमन राग की रसपूर्ण अव-तारणा सुरीली, कर्णप्रिय तथा आकर्षक थी। प्यारा सिंह द्वारा तार शहनाई पर पूरिया कल्याण तथा उस्ताद गुलाम सादिक तथा सिराज द्वारा मारू विहाग में गायन रूखा, भावहीन तथा कहीं कहीं स्वर दोष युक्त भी रहा। अन्य कार्यक्रमों में सुनील बोस द्वारा ठुमरी दादरा, महाराज वीरसिंह और हरभजन सिंह द्वारा ध्रुपद तथा अमर जीत सिंह द्वारा ख्याल गायन भी उल्लेखनीय था। इस संगीत समारोह की उपलब्धि तथा देन रही दो नयी पीढ़ी के गायक और दोनों पटियाला गायकी के रहे। पूरे समारोह में सरल शास्त्रीय ठुमरी दादरा गायन का सबसे प्रशंसनीय कार्यक्रम सरदार मोहिंदर सिंह ने पेश किया। जिस हरकत भरे कंठ और पुरअसर शैली में इन्होंने ठुमरी खमाज, आसा भांड तथा दादरा सिंह भैरवी पेश किया पंजाब अंग की सरल शास्त्रीय गायकी अर्थात् उस्ताद बड़े गुलाम अली खां और उस्ताद बरकत अली खां की याद बरबस ताजा करने वाली रही। दिल्ली में प्रथम बार युवा गायक (जिसके लिए आयोजक बधाई के पात्र हैं) कला द्वारा दरबारी में ख्याल तथा तराना चकित कर देने वाला और युवा गायक की प्रतिभा को मुखरित करने वाला था। राजन मिश्र ने यद्यपि संगीत शिक्षा वाराणसी के बड़े रामदास जी तथा अपने चाचा पं. गोपाल मिश्र से ग्रहण की है, पर इनकी गायकी पटियाला घराने के उस्ताद अमानत अली खाँ और उस्ताद फतेह अली खाँ की गायकी को प्रारम्भ से अन्त तक प्रतिबिम्बित करने वाली रही। आवाज

लगाने का ढंग, राग विस्तार की शैली, सरगम बोल तान उच्चारण, विविध गमकों और तानों को कहने का ढंग सभी समझ-बूझ पूर्ण, रागदारी के ज्ञान की परिचायक तथा तैयारी से पूर्ण रही। इस वर्ष समारोह में पं. सियाराम तिवारी, स्वामी पागल दास, प्रकाश वढ़ेरा, उस्ताद असद अली खां तथा उस्ताद विलायत ख़ाँ ने भी भाग लिया। संगतकारों में उस्ताद सावरी खाँ, प्रेम वल्लभ, गोपाल दास, आनन्द गोपाल. मनमोहन सिंह तथा लतीफ अहमद खाँ का नाम और संगत उल्लेखनीय रही।

**ECONOMIC NEWS :**
**NEW DELHI :**
**28TH APRIL 1974**

# Namdhari Sangeet Sammelan

Few observers of the Indian musical scene have taken note of Punjab's contribution to the richness and vitality of Indian classical music. The only scriptures in the world set entirely to classical music is the Guru Granth Sahib and in countless gurdwaras scattered in remote hamlets and towns the morning prayers begin on the notes of Todi and Asawari, the kirtan at dusk is clothed in the raiment of a Yaman or a Darbari Kanhra. At Guru Nanak's signal, his life-long companion and rabab player, Bhai Mardana, would strike the notes of a particular raga and the "Vani" would flow from the Guru's lips Later, during the time of Guru Arjun Dev, when the chief musicians of the gurdwara, Satta and Balwand, were assailed by a sense of ego and indispensability, the Guru ordered their dismissal and bade every member of the congregation learn Shastriya Sangeet.

The Namdharis are followers of that worthy tradition. Their just concluded sangeet sammelan at the Mavlankar Auditorium was an inspiring affair, as much for the range of musicianship brought to the podium (all the reigning greats, Vilayat Khan, Asad Ali Khan, Pandit Jasraj, Bhim Sen Joshi, Siya Ram Tiwari, Ram Narayan, Amjad and lesser known but equally celebrated artists like Master Rattan Lal of Punjab) as for the organizational touches and above all ticketless entery for all music lovers.

SHANTA SERBJEET SINGH

HINDUSTAN TIMES
April 24, 1974

**CONCERTS**

## *A feast of clean music*

As in previous years, the three-day Sangeet Sammelan organised in honour of Sri Satguru Pratap Singhji at Mavalankar Hall was

marked by a sense of dedication and discipline. The "Namdhari" sect of Punjab believes that devotion to classical music is a step forward to reach the goal of life. The programme was well planned and balanced, judiciously incorporating almost all varieties of classical, vocal and instrumental music. It is also worth mentioning that the audience listened to the performers with rapt attention. This enhanced the sanctity and dignity of the festival.

Two dozen artists took part in the four sessions of the festival. There were veterans and others. Among the stalwarts were Ustad Vilayat Khan (outstanding vocalist), Ram Narain, (noted sarengi player), Siyaram Tiwari (Dhrupadiya), Jasraj (sensitive vocalist), Anant Lal and party (shahnai), Master Rattan (vocalist of Punjab) and Ustad Asad Ali Khan (been). The final came from Ustad Amjad Ali Khan, the young sarod idol. All of them rose to the occasion to delight the audience. Several young musicians of Punjab were introduced to the lovers of classical music of the Capital, and they acquitted themselves creditably. The most attractive feature of the festival was "Guru vani"—, devotional music in the orthodox Dhrupad style with the typical technique on the "mridang" of Punjab by Maharaj Birsinghji and party.

महाराज बीर सिंह जी तथा साथी

श्री हरिभजन सिंह जी तथा साथी

ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ
1974

प्रताप सिंह
ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਪ੍ਰਤਾਪ
ਸੰਗੀਤ ਸਮੇਲਨ